Capitalist Planning and Socialist Planning

पूंजीवादी नियोजन में निजि क्षेत्र संवृद्धि का प्रेरणा स्त्रोत होता है। संवृद्धि के लिए सरकार निजी क्षेत्र को विभिन्न प्रकार की प्रोत्साहनात्मक कार्यवाही एवं सुविधाएँ प्रदान करती है। निजी क्षेत्र के सामान्य दिनचर्या में सरकार हस्तक्षेप नही करती है। पूंजीवादी नियोजन वित्तिय नितियों तथा मूल्य नियंत्रण के द्वारा जनता को इस बात के लिए प्रोत्साहित करती है कि वह सुनिश्चीत तरीकों को अपनाकर ही नियोजन में सहायता देकर आर्थिक विकास में योगदान दे। पूंजीवादी नियोजन में कराधान एवं ऋणों के द्वारा भी उत्पादन की मात्रा एवं किस्म को प्रभावित किया जाता है।

पूंजीवादी नियोजन के निम्नलिखित गुण होते है-

1. निजी सम्पत्ति रखने का अधिकार -

पूंजीवादी नियोजन में निजी सम्पत्ति रखने का अधिकार सभी व्यक्तियों को प्राप्त रहता है। इसके फलस्वरूप सभी व्यक्तियों में बचत एवं पूंजी संचय की प्रवृत्ति पायी जाती है। मितव्ययिताएं प्राप्त करना प्रत्येक उद्यमियों का लक्ष्य रहता है। लाभ अर्जित करना तथा निजी सम्पत्ति का सृजन करना पूंजीवादी नियोजन मे पाया जाता है।

2. उत्तराधिकार का नियम लागू रहता है -

पूंजीवादी नियोजन में उत्तराधिकार का नियम लागू रहता है इसलिए निजी व्यक्तियों द्वारा निवेश में लगातार वृद्धि होती है।

3. प्रोत्साहन मूलक नियोजन -

पूंजीवादी नियोजन सत्ता प्रशुल्क एवं वित्तिय नीतियों तथा मूल्य नियंत्रण के द्वारा जनता को इस बात के लिए प्रोत्साहित करती है कि वह निश्चित ढंगों को अपनाकर ही नियोजन में सहायता देकर आर्थिक विकास में योगदान दे

4. लाभ की प्रवृत्ति एवं राष्ट्रीय हित के बीच तालमेल -

पूंजीवादी नियोजन में निजी उपक्रमों को लाभ अधिकतम करने की स्वतंत्रता रहती है किन्तु राष्ट्रीय हित को भी ध्यान में रखना पड़ता है। इसके लिए कराधान एवं नियमों के द्वारा भी उत्पादन की मात्रा एवं किस्म को प्रभावित किया जाता है।

5. उपभोक्ता एवं उत्पादक को स्वतंत्रता

पूंजीवादी नियोजन में उपभोक्ता एवं उत्पादक दोनों को स्वतंत्रता रहती है। वस्तु के चयन के मामले में उपभोक्ता विशिष्ट भूमिका निभाता है। उत्पादक को भी उत्पादन करने एवं विनियोग

निर्णय लेने की पूर्ण स्वतंत्रता पूंजीवादी नियोजन में रहती है। किन्तु राष्ट्र हित को ध्यान में रखने के कारण पूंजीवादी नियोजन करारोपण तथा अधिप्रदान नीतियों से उपभोक्ता एवं उत्पादक को प्रभावित किया जाता है।

6. लोचपूर्ण

पूंजीवादी नियोजन में अत्याधिक लोचता रहती है। इस कारण से आर्थिक स्थितियों में परिवर्तन होने पर नियोजन के भी अनुकूल परिवर्तन किये जा सकते है।

पूंजीवादी नियोजन के निम्नलिखित दोष है-

1. साधनो में गतिशीलता का अभाव

पूंजीवादी नियोजन में साधनो में गतिशीलता का अभाव पाया जाता है। पूंजीवादी नियोजन वास्तव में प्रोत्साहन मूलक नियोजन है। किन्तु किस श्रेणी में प्रोत्साहन देने पर साधन गतिशील होंगे, यह जान पाना कठिन है।

2. मुद्रा प्रसार या संकुचन का भय-

उत्पादक को स्वतंत्रता रहने पर अत्याधिक लाभ की आशा में अति निवेश होने के कारण मुद्रा-प्रसार की स्थिति पूंजीवादी नियोजन में सृजन होती है। ठीक इसके विपरीत हानि की प्रबल आशंका से निवेश घटता है और मुद्रा संकुचन की स्थिति पूंजीवादी नियोजन में उत्पन्न

हो जाता है।

3. मांग एवं पूर्ति में सामंजस्य का अभाव

पूंजीवादी नियोजन एक प्रोत्साहन मूलक नियोजन है इसलिए मांग एवं पूर्ति में सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता है। अगर प्रोत्साहन प्रणाली सही है। उपभोक्ता को प्रोत्साहन कितना दिया जाए तथा उत्पादक को प्रोत्साहन कितना दिया जाए इसकी सही गणना संभव नहीं है।

4. नियोजन के उद्देश्य प्राप्ती में विलम्ब

पूंजीवादी नियोजन में किसी प्रकार की आज्ञा न तो उपभोक्ता को दी जाती है और न ही उत्पादक को जिसके परिणामस्वरूप प्रोत्साहन द्वारा समय पर परिणाम उपलब्ध नहीं होता है। इसी कारण से पूंजीवादी नियोजन के उद्देश्य प्राप्ती में विलम्ब हो जाता है।

5. व्यापार चक्र का उदय

पूंजीवादी नियोजन में प्रोत्साहन मूलक तरीको से कभी कभी आशावाद सृजित हो जाती है। जिससे तेजी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ठीक इसके विपरीत पूंजीवादी नियोजन में प्रतिबन्धात्मक क्रियाओं से निराशावाद सृजित हो जाती है जिससे मंदी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

Dr Sandhya Rani
(Next Part-2 में)